में मात्रा, शब्दों की बहुत सी भूलें दृष्टिगोचर होती हैं, यह स्वाभाविक कहा भी जा सकता है। ऐसे ही एक सामान्य अक्षरज्ञान वाले कीर्तनकार के हाथ से १८ वी शताब्दी में लिखे संग्रह में 'बिलाओल अलइयो' इस शीर्षक के अन्तर्गत कितने ही पद लिखे दिखाई देते हैं, और किसी संग्रह में 'राग अल्हैया' अथवा 'अल्हैया बिलावल' ऐसा संयुक्त नाम भी देखने में आता है।

ये सब देखते हुए स्पष्ट होता है कि उत्तरभारतीय संगीत-घरानों के गायकों और अष्टछाप—संगीतपरंपरा के गायकों ने भी निषाद के प्रयोग वाले स्वरूप को बिलावल नाम से ही बताया और बताते आये। परन्तु इसवी सन की बीसवीं शताब्दी के आरंभ के बाद से धीरे—धीरे भारतीय संगीत के गायकों में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोनों के भिन्न स्वरूपों को समझकर गाने का व्यवहार मे प्रचार में आने लगा। परिणामस्वरूप आज अपने वर्तमान गायक—वादको के गायन—वादन तथा संगीतशिक्षा देती पाठशालाओं के शिक्षण में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोनों का स्वरूप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार उत्तरभारतीय संगीत के सभी क्षेत्रों से इन दोनों स्वरूपों का स्पष्ट प्रकार गाया गया हो तब हवेलीसंगीत के गायक-वादकों को भी प्राचीन व्यवहार में से बाहर आना उचित ही होगा।

क्योंकि सम्प्रदाय में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोंनों रागों में विविध तालों में गाए जानेवाली परंपरा उसी प्रकार से है। इससे इन दोनों रागों का स्वरूप और भेद जानना आवश्यक है। बिलावल राग के शुद्ध स्वरूप के विषय में इससे पहले हम देख चुके हैं। इसलिए अल्हैया बिलावल के विषय की जानकारी और उसका स्वरूप पर यहाँ पर विचार करेंगे।

मृदु मध्यम सब तीव्र सुर, मध्यम से न चढ़ैया।
कहुं निषाद कोमल लगत, ध ग संवाद अल्हैया॥

अल्हैया बिलावल में गानसमय-स्वर-वादी-संवादी बगैरह बिलावल के ही होते हैं। सिर्फ बिलावल के आरोह में मध्यम स्वर छोड कर अवरोह में कोमल निषाद का कभी-कभी थोडे प्रमाण में प्रयोग करने से अल्हैया बिलावल कहा जाता है। जब कि बिलावल के प्रकार में बहुधा धैवत की संगत से अवरोह में बीच-बीच में कई बार निषाद कोमल वक्र लिया जाता है। परन्तु अल्हैया में कोमल नि का अवरोह में 'सां, ध नि ध प,' जैसा स्पष्ट प्रयोग अल्पप्रमाण में किया जाता है। गान्धार स्वर का भी अवरोह में वक्र प्रयोग है, जैसे कि-'गप, मग मरे,' इस राग का अंग उत्तरांगप्रधान कहा जाता है।

न्यासस्वर-षड्ज ऋषभ और पंचम हैं। जाति संपूर्ण है।

पकड स्वर-गरे, गप, ध, निसां

आरोह-अवरोह - सा रे, गरे, गप, ध, निध, सां, सांनिधप,
धनिधप, मग, मरे, सा

अब पुष्टिसम्प्रदाय के सेवाक्रम में प्रातः शृंगार के समय गाये जाने वाले 'अल्हैया बिलावल' राग के पद-कीर्तनों में से सुप्रसिद्ध जैसे निम्न पद स्वरांकन सहित उदाहरणरूप से देखेंगे :

राग अल्हैया बिलावल-ताल चौताल

आजु कौ सिंगार देख्यौ लाडिले गोपालजू को,
धर्यो है टिपारो सीस सोभा अति भारीजू।
तेसोई बन्यो मल-काछ कटि क्षुद्र घंटिकाजू,
परम मधुर नाद कोउ उचारीजू ॥१॥
पग नूपुर रुनझुनात चलत घोष शब्द सुहात,
नटवर घनस्याम वरन देखत ब्रजनारीजू।
'कुंभनदास' आएं पास करत हैं सुख मधुरहास,
बिलावल तान एक मुरली में ललकारीजू ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	ध	नि	प	ध	नि	ध	प	म	ग
आ	—	जु	को	—	सिं	गा	—	र	दे	—	ख्यो
ग	म	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	सा
ला	—	डि	ले	—	गो	पा	—	ल	जू	—	कौ
सा	सा	—	ग	म	रे	ग	प	ध	नि	सां	सां
ध	यौं	—	है	—	टि	पा	—	रो	सी	—	स
सां	रें	गं	रें	सां	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
सो	—	भा	—	अ	ति	भा—	—	—	री	——	जू

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	सां	रें	सां	सां
ते	सो	ई	ब	—	न्यो	म	—	छ्र	का	—	छ
नि	नि	—	नि	ध	नि	सां	रें	सां	ध	नि	प
क	टि	—	क्षु	—	द्र	घं	—	टि	का	—	जू
ध	ध	—	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	सां
प	र	—	म	—	म	धु	—	र	ना	—	द
सां	रें	गं	गं	रें	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
को	—	—	ऊ	—	उ	चा—	—	—	री	——	जू

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	ध	प	मग	प	प	ध	नि	ध	प	—	प
प	ग	नू	पु—	—	र	रु	न	झु	ना	—	त
प	प	प	ध	नि	सां	रें	सां	सां	ध	नि	प
च	ल	त	धो	—	ख	स	ब्द	सु	हा	—	त
ग	गरे	गम	प	म	ग	म	रे	रे	सा	रे	सा
न	ट	व—	र	घ	न	स्या	—	म	ब	र	न
सा	—	ध	ध	प	प	ध	नि	सां	ध	नि	प
दे	—	ख	त	ब्र	ज	ना	—	—	री	—	जू

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	रें	सां	सां	सां	—	सां
कुं	भ	न	दा	—	स	आ	—	ये	पा	—	स
सां	सां	रें	गं	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	प
क	र	त	है	मु	ख	म	धु	र	हा	—	स
ग	ग	—	ध	—	ध	ध	नि	प	ध	नि	सां
बि	ला	—	ब	—	ल	ता	—	न	ए	—	क
सां	रें	गंमं	रें	सां	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
मु	र	ली—मैं		—	ल	ल	का	—	री	—	जू

राग अल्हैया बिलावल–ताल चौताल

ए आजु अरुन–अरुन डोरे द्रगनि लालके लागत अतिभले ।
बंदन–भरे पगनि अलि मानों कंज दलनि परसत चले ॥१॥
लालकी पगिया बीच न समात कुटिल अलक आलस झलभले ।
'नंददास'प्रभु पहोपनि मधि मानें मधुप गुंज सोभित तें कलमले ॥२॥

स्थायी

							ग	प	नि	ध	नि
							ए	–	आ	–	ज
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सां	सांध	नि	प	ध	प	म	प	म	ग
अ	रु	न	अ–	रु	न	डो	–	रे	द्र	ग	नि
म	ग	म	रे	–	सा	सा	म	ग	प	नि	नि
ला	–	–	ल	–	के	ला	–	–	ग	–	त
रें	सां	–	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	ध	नि
अ	ति	–	भ	ल	–	–	ए	–	आ	–	ज

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	–	–	नि	ध	नि	सां	–	–	सां	रें	सां
बं	–	–	द	–	न	भ	–	–	रे	–	प
सां	–	रें	गं	मं	रें	सां	–	–	ध	नि	प
ग	–	ज	अ	–	लि	मा	–	–	नौं	–	–

ध	धनि	ध	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	सां
कं	—	—	ज	—	द	ल	—	नि	प	—	र
रें	सां	—	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	—	ति
स	त	—	च	ल	—	—	ए	—	आ	—	ज

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	प	ध	ध	नि	ध	प	—
ला	—	—	ल	—	की	प	गि	—	यां	—	—
प	—	ध	नि	सां	सां	सां	—	—	ध	नि	प
मैं	—	—	न	—	स	मा	—	—	त	—	—
ध	प	म	ग	म	प	म	ग	म	रे	—	सा
कु	—	टि	ल	—	—	अ	—	—	ल	—	क
सा	—	ध	ध	नि	प	सां	सां	—	ध	नि	प
आ	—	ला	स	—	—	झ	ल	—	म	—	ले

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	नि	ध	नि	सां	—	सां	सां	रें	सां
नं	—	—	द	—	—	दा	—	स	प्र	—	सु
सां	रें	गं	मं	रें	रें	सां	—	सां	ध	नि	प
ब	हो	—	प	—	नि	म	—	ध्य	मा	—	नों

ध	धनि	ध	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	—
म	धु—	प	गुं	—	ज	सो	—	भि	त	तें	—
रें	सां	—	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	ध	नि
क	ल	—	म	—	ल	—	ए	—	आ	—	ज

राग अल्हैया बिलावल—ताल चर्चरी (झपतालअंग)

कोन लई कोन दई ईंडुरिया गोपाल मेरी ग्वालबाल सखन मांझ तुम ही हँसत हो ।
गहिपत मुधे रहो कोन लई कासों कहो,
लेत कोन देख्यो सखी कहाँ तुम बसत हो ।।१।।
दई है दुराइ धरत घोस में कहा चोर परत,
एसी होय कबहु लाल कोन पे रिसत हो ।
'नंददास' बसत बास ब्रज में गिरिराज पास,
टेडो फेंटा आडबंध कोन पे कसत हो ।।२।।

स्थायी

×		२			०		३		
सां	—	सां	ध	प	ध	नि	ध	प	प
को	—	न	ल	ई	को	—	न	द	ई
म	ग	रे	गम	प	मग	म	रे	सारे	सा
ई	डु	रि	यां—	गो	पा—	—	ल	मे—	री
सा	सा	ग	म	रे	ग	प	ध	नि	प
ग्वा	ल	बा	ल	स	ख	न	मां	—	झ
ध	नि	सां	रें	सां	ध	प	प नि	ध	नि
तु	म	ही	—	हँ	स	त	हो	—	—

अंतरा

×		२	नि		०		३		
प	प	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	—
ग	हि	प	त	—	सु	धे	र	हा	—
सांध	निध	सां	सां	रें	सां	सां	सां	ध	निप
को—	——	न	ल	ई	का	सों	क	हो	——
ग	म	ध	—	ध	सां	सां	ध	नि	प
ले	त	को	—	न	दे	ख्यो	स	खी	—
ध	नि	सां	रें	सां	ध	प	नि	ध	नि
क	हा	तु	म	ब	स	त	हो	—	—

संचारी

×		२			०		३		
ग	ग	प	—	प	ध	ध	ध	नि	प
द	ई	हे	—	दु	रा	ई	ध	र	त
प ग	प	नि	ध	नि	सां	सां	सां	धनि	प
घो	स	मैं	क	हा	चो	र	प	र—	त
सां	सां	ध	प	प	म	प	म	ग	मरे
ए	सी	हो	य	क	ब	हु	ला	—	ल—
ग	म	प	ग	मग	म	रे	सा	—	—
को	न	पैं	—	रि—	स	त	हो	—	—

आभोग

×		२			०		३		
प	प	प	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
नं	द	दा	स	ब	स	त	बा	—	स
सां	रें	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	प
ब्र	ज	मैं	गि	रि	रा	ज	पा	—	स
ग	म	ध	ध	प	ध	नि	सां	धनि	प
टे	डो	फॅ	टा	—	आ	ड	बं	—	ध
ध	नि	रें	सां	सां	ध	प	नि	ध	नि
कौ	न	पॅं	—	क	स	त	हो	—	—

(अल्हैया–बिलावल राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपिके लिये ‘संगीत-सुबोधिनी ” एवं “ संगीतकीर्तनपद्धति ” ग्रन्थको देखिये ।)

राग अल्हैया–बिलावल–ताल धमार

महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम ।
प्रेममुदित जुवती जस गावत, स्यामसुंदरको ले ले नाम ॥१॥
जहां तहां लीला अवगाहत, खरिक खोरि दधिमंथन धाम ।
करत कुतूहल निस अरु बासर, आनंदमें बितत सब याम ॥२॥
नंदगोपसुत सब सुखदायक, मोहन मूरति पूरनकाम ॥
“ चत्रभुज’’प्रभु गिरिधर आनंदनिधि, नखसिख रूप सुभग अभिराम ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
ध	ध	—	ध	—	ध	नि̲	ध	प	—	म	ग	म	रे
म	हा	—	म	—	हो	—	च्छ	व	—	श्री	—	—	—

ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	—	—
गो	—	—	कु	—	ल	—	गा	—	—	म	—	—	—
रें	रें	—	सां	नि	सां	—	ध	नि̲	ध	प	म	ग	—
म	हा	—	म	—	हो	—	च्छ	व	—	श्री	—	—	—
म	रे	—	ग	म	प	—	म	ग	म	रे	—	सा	—
गो	—	—	कु	—	ल	—	गा	—	—	—	—	म	—

अंतरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
प्रे	—	—	म	—	मु	—	दि	त	—	जु	—	व	—
नि	रें	—	गं	—	रें	—	सां	रें	—	सां	—	सां	—
ती	—	—	ज	—	स	—	गा	—	—	व	—	त	—
ध	—	—	ध	—	ध	नि̲	ध	प	—	म	ग	म	रे
स्या	—	—	म	—	सुं	—	द	र	—	को	—	—	—
ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	—	—
ले	—	—	ले	—	—	—	ना	—	—	म	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
ध	ध	—	ध	—	ध	नि̲	ध	प	—	म	ग	म	रे
ज	हां	—	—	—	त	—	हां	—	—	ली	—	—	—
ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
ला	—	—	अ	—	व	—	गा	—	—	ह	—	त	—

रें	रें	—	सां	नि	सां	—	ध	नि	ध	प	म	ग	—
ख	रि	—	क	—	खो	—	—	रि	—	द	—	धि	—
म	रे	—	ग	म	प	—	म	ग	म	रे	—	सा	—
मं	—	—	थ	—	न	—	धा	—	—	म	—	—	—

‘आभोग’ अंतरानुसार।

राग नट-बिलावल

हवेली(अष्टछाप)संगीत घराने में बिलावल का यह प्रकार भी प्राचीन और परंपरागत माना जाता है। नट-बिलावल राग नट और बिलावल के संयोग से बना हुआ है। इस सम्बन्ध में लक्ष्यसंगीतकार का शास्त्रीय उल्लेख निम्न प्रकार है :—

‘नटबिलावल राग शंकराभरण (बिलावल) थाट से उत्पन्न होता है। वादी स्वर ‘मध्यम’ है। पूर्वांग में जब नट का भाग लिया जाता है तब गौड की कुछ छाया दिखाई देती है। परन्तु अवरोह में बिलावल का अंग स्पष्ट लगने पर यह रागस्वरूप निश्चित हो जाता है। नट की तरह ‘मध्यम’ व्यस्त (खुला) आता है। रे ध की संगति विचित्र है। यह राग दिन के प्रथम प्रहर में गाया जाता है। *

पं. भातखंडेजी ने इस राग का चलन निम्न प्रकार कहा है :—

सा, ग, गम, म, मप, मग, मरे, निधप म, पमग, रे, ग, मप, मग मरेसा, तथा उठाव में सा, ग, गम स्वर लेकर आगे अवरोह में बिलावल (अल्हैया) जोड दिया जाता है।

---

* शंकराभरणान्मेलाज्जातिरागखुनामकः।
बिलावलो नट्टपूर्वौ मध्यमांशो गुणिप्रियः॥
(देखिये हिं. सं. प. भाग—१)

इस आधार पर उसका प्रचलित स्वरस्वरूप निम्न प्रकार होगा। सा, ग, गम, मप, धनिसां, पप, धनिसां, सांगं गं मं, रेंसां, धनिप, मपमग, मरे, रेसा ।

हवेलीसंगीत परंपरा में उपर्युक्त स्वरस्वरूप के अतिरिक्त पंचम से ऋषभ (परे) की मींड तथा धप, रेगमप, मगमरे, सारेसा इस प्रकार पूर्वांग में छायानट का अंग भी दिखाई देता है तथा गान्धार स्वर बक्र और सरल गति से लिया जाता है। अवरोह में कोमल निषाद भी धनिधप और निधप इस तरह वक्र और सरल लिया जाता है। बाकी के स्वर शुद्ध हैं। वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज माना जाता है।

सम्प्रदाय में प्रायः इस राग का गान होली और अन्नकूट के अवसर पर सुनने में आता है।

उदाहरणार्थ अत्र अन्नकूटवर्णन का निम्न पद स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार दिया गया है :—

राग नट-बिलावल—ताल त्रिताल,मात्रा ८

गोद बेठे गोपाल कहत व्रजराजसों।
अहो तात एक बात स्रवण दे सुनोजो मेरी।
भवन मांझ हों गयो धरी जहां सोंज घनेरी।
में हँसि मांग्यो मायपे भोजन देरी मोहि।
कर लकुटी ले यों कह्यो यह क्यों देहों तोहि ॥२॥
(अधिकके लिये कीर्तनसंग्रहोंमें गोवर्धनलीला के पदों में देखिये)

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
ग गम	ग रेगम	प	ध नि	सां निसां	नि ध	प गम	रे ग
गो ऽऽ	द बेठेऽ	ऽ	गो ऽ	पा ऽऽ	ल का	ह तऽ	व्र ज

ग
म धनिध पप रेग मप म —गम रेसा —— —
र —— — जसों —— —— —— —— —— —

अंतरा

× २ ० ३ × २ ० ३
प धनिध पध निसां रेंनि सांसां निधप मगरे ग
सु नो—— ता— तए कवा —त ख्र—व न—दे —
गम निध पम रेग मपम गम रेसा —— —
सु— नो—जुमे —— ——री —— —— —— —

संचारी

× २ ० ३ × २ ० ३
ग गमग रेगम पध निसां सांधनि धप मगरे ग
भ वृ—न मां—— झहों —ग यो—— धरी ——ज हां
म निध पप रेरेग मपम ग म रे सा रेसा —
सां —झ धने ———— ——री —— —— —— —

आभोग प्रकार—१

× २ ० ३ × २ ० ३
प —नि निनि —— धनि सां— सांसांरें गंगं मं
में —ह सिमां —ग्यो —— मा— य पें— —— —

अथवा प्रकार—२

× २ ० ३ × २ ० ३
गं —गं गंगं —मं —— गं— रेंसां रेंगं मं
में —ह सिमां —ग्यी —— मा— यपैं —— —

रें गंरें सां सांप —नि धनिसां —— —गं रेंसां —
— भो—ज नदे —री ——मो —— —— —— हि

— सांरें गं रेंसां —नि धप धग मप —नि ध
— करल कुटी —ले —— यों— कह्यो —— —

नि सांरें गंमं रेंसांनिधपध निसां —धनि धप मगरे ग
— यहक्यों —दे- ——हों — तो —हि— कह त—ब्र ज

गम पनिध पप रेरेग मपग मरे —सा —— —
रा- —— जसों —— —— —— —— —— —

राग कुकुभ-बिलावल

यह राग प्राचीन है । संगीतरत्नाकरादि ग्रन्थों में इसका[1] नामोल्लेख प्राप्त होता है । कुकुभ को कोई ककुभ भी कहते हैं । कुकुभ राग बिलावल का एक प्रकार होने से व्यवहार में 'कुकुभ-बिलावल' ऐसा

---

[1] मध्यमापंचमीधैवत्युद्भवः ककुभो भवेत् । (रत्नाकरे)

[2] पंचमोद्ग्राहसम्पन्ने धहीने ककुभं पुनः ।
तीव्रगान्धाररहित्यमारोहे चावदन्बुधाः ॥४०५॥
(संगीतपारिजात)

संयुक्त नाम प्रचलित है। इस राग को जैजैवन्ती और बिलावल (अल्हैया) का मिश्रण तथा झिंझोटी और बिलावल का संयोग से उत्पन्न हुआ माना जाता है। यह दोनों प्रकार से यह राग गाया जाता है।

जैजैवन्तीमिश्र प्रकार में रे, रे, गम गरे, सा, ध, नि प, तथा म प, ध म प, सां, ध, प, ध म ग, म रे, सा यह स्वरों का महत्त्व रहता है और झिंझोटीमिश्र प्रकार में सा ग, म, म प, म ग रे ग सा, रे, ग म प तथा ग म, ध निसां, सां ध नि प, सां, नि ध प, ध म, ग, सा, ग, म इन स्वरों का महत्त्व दिखाई देता है।

पं. अहोबल नें कुकुभ राग में धैवत स्वर वर्ज्य तथा आरोह में गान्धार वर्ज्य करने का कहा है। कुकुभ का स्वरूप ध्यान पं. भावभट्ट ने 'अनूपसंगीतविलास' में इस प्रकार कहा है :–

मानिनि मामवमानितमेका ते कान्तमीदृशम् ।
दीने संभावयत्ययं पीतांगः ककुभरागोऽयम् ॥३८६॥

परन्तु परंपरा और प्रचार की दृष्टि से धैवत स्वर वर्ज्य नहीं है तथा आरोह में गान्धार स्वर का प्रयोग किया जाता है। सा—म और सा–प की स्वरसंगति महत्त्वपूर्ण दिखाई देती है, जैसे–सा, ग, ग म सा, रे ग, म तथा सा, रे, ग, म प इत्यादि अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग अल्हैया-बिलावल का संयोग स्पष्ट करता है।

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। गानसमय (बिलावल के अनुसार) प्रातःकाल का माना जाता है। वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर ऋषभ है। कोई वादी मध्यम और संवादी षड्ज मानते

हैं । दोनों निषादों का प्रयोग होता है । जाति सम्पूर्ण[१] है ।

पं. भातखण्डेजी के मतानुसार कुकुभ के दोनों प्रकारों का चलन इस प्रकार है :—

झिंझोटीमिश्र प्रकार—१ । साग,म,निधप,मप,गम,सा,ग,गम,धनिसां, सांधनिप,धम,ग,सा,गम

जैजैवन्तीमिश्र प्रकार—२ ।

रेरे, गमगरे, सा, निसारे, सा, ध, निप, गम, मप, धमप, सां, ध, प, धमग, मरे, सा

लगभग ४० साल पूर्व कांकरोली में श्रीजी के संमुख कीर्तनिया के मुखियाजी श्रीमन्नालालजी से 'घाट पर ठाडे मदनगोपाल' यह बिलावल राग का पद गाते हुए सुना था, किन्तु कुछ अलग ढंग होने से बाद में मुखियाजी से सुनकर कुछ कंठस्थ भी कर लिया था । उस समय किसी को बिलावल के यह कुकुभ प्रकार का ख्याल नहीं था । संशोधन के बाद उस बंदिश का जो कुछ ढंग स्मरण में रहा है उस आधार पर कहा जाता है कि यह कुकुभ-बिलावल का प्रकार था ।

'संगीतादित्य' में भी 'पारिजात' का यही उदाहरण दिया है और लिखा है कि 'यह संपूरन है तथापि धैवत कम लगाया जाता है । निषाद

---

[१] वैलावल्याः प्रभेदः ककुभ हति मतो मान्यतीव्रस्वराढ्यः ।
संवादी पंचमोऽस्मिन् विलसति नितरां पंचमो वादिपीठे ।
संमिश्रो जैजवंत्यामभवदिति सुधियो यद् वदन्ति ध्रुवं तद्
गायन्ति प्रातरेव प्रतिदिवसममुं गानशास्त्रप्रवीणाः ॥२३॥
(रागकल्पद्रुमांकुर)

कोमल है और सब शुद्ध है। रिषभ प्रधान सुर है। आरोह में गन्धार धैवत नहीं हैं वैसा ही पारिजात में लिखा है'

जिसकी स्वरलिपि भी यहां पर दी गई है :-

राग कुकुम-बिलावल—ताल धमार

घाट पर ठाडे मदनगोपाल।
कोन जुगति कर भरौंरी जमुनाजल पर्यो हे हमारे ख्याल ॥१॥
घोस बढ्यो घर सास रिसेहें चलि न सकत एक चाल।
कहा करूं अब यों नहीं मानत सुंदर नंदको लाल ॥२॥
कछुक संकोच कछु चोंप मिलनकी परी प्रेमकी जाल।
"परमानंदस्वामी" चित्त चोर्यों बेनु बजाई रसाल ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	नि	ध	प	—	ध	म	—	ग	—	रे	ग
ठा	—	—	डे	—	—	—	म	द	—	न	—	—	गो
म	—	—	ग	रे	ग	सा	रे	ग	—	म	—	प	—
पा	—	—	ल	—	—	धा	—	ट	—	प	—	र	—

अंतरा

×					२		०			३			
प	—	—	नि	—	नि	—	सां	सां	रें	सां	—	सां	—
को	—	—	न	—	जु	—	ग	ति	—	क	—	र	—
सां	ध	—	सां	—	सां	रें	सां	—	ध	नि	ध	प	—
भ	रौं	—	री	—	ज	मु	ना	—	—	ज	—	ल	—

प	प	—	ध	म	ग	रेग	म	प	—	सां ध	नि	सां	नि
प	यों	—	हे	—	—	ह—	मा	—	—	रे	—	—	—
ध	प	ध	म	गरे	ग	सा	रे	ग	—	म	—	प	—
ख्या	—	—	ल	—	—	घा	—	ट	—	प	—	र	—

राग कुकुभ-बिलावल-ताल चर्चरी (झपताल अंग)

गोकुलकी पनिहारी पनियां .भरन चली बडे बडे नेना तामें सुभ रह्यो कजरा । पहिरें कसूंभी सारी अंग अंग छबि भारी गोरी गोरी बहियनमें मोतिनके गजरा:॥१॥ सखीसंग लिये जात हस हस बूझत बात तन हूंकी सुधि भूली सीस धरें गगरा । "नंददास" बलहारी बीच मिले गिरिधारी नयनकी सेननमें भूल गई डगरा ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	नि	धप	प	ध	म	—	ग
गो	कु	ल	की	——	प	नि	हा	—	री
रे	रे	ग	म	प	म	ग	रे	ग	सा
प	नि	यां	—	भ	र	न	च	ली	—
सा	रे	ग	म	रेग	म	प	—	निध	नि
ब	डे	ब	डे	——	ने	ना	—	ता—	में
सां	नि	धप	ध	म	ग	सा	रे	गम	प
सु	भ	र—	ह्यो	—	क	ज	रा	—	—

अंतरा

×		२			०		३		
प	प	नि	—	नि	सां	सां	सां	—	सां
प	हि	रं	—	क	सूं	भी	सा	—	री
सां	गं	गं	—	मं	गं	रें	सां	—	सां
अं	ग	अं	—	ग	छ	बि	न्या	—	रा
		प	ध						ध
सां	ध	ध	नि	धप	ध	म	प	निध	नि
गो	री	गो	—	री—	ब	हि	य	न—	में
सां	नि	धप	ध	म	ग	सा	रेग	मरे	मप
मो	ति	न—	के	—	ग	ज	रा—	——	——

राग गौड-बिलावल

गौड-बिलावल राग गौड-मल्हार और अल्हैया-बिलावल के संयोग से उत्पन्न होता है। इस राग को कोई 'बिलावल-मल्हार' भी कहते हैं। थाट बिलावल है, कोई खमाज थाट भी मानते हैं।[१]

इस राग में सातों स्वरों का प्रयोग किया जाता है अतः इसकी जाति सम्पूर्ण है। शुद्ध निषाद आरोह अवरोह में सरलता से लिया जा सकता हैं, किन्तु विशेषतः आरोह में ही दिखाई देता है। कोमल निषाद का प्रमाण कुछ कम रहता है और अवरोह में सरल एवं वक्र स्वरूप से ध नि ध प अथवा धनि प इस प्रकार प्रयोग किया जाता

---

[१] पं. भावभट्ट के 'अनूप संगीतबिलास' ग्रन्थ के रागाध्याय में गौड-बिलावल का 'गौडो बिलावलाज्जातः कामोदः पंचधा भवेत्' (श्लोक–२१५) ऐसा उल्लेख पाया जाता है।

है। उसी तरह गान्धार भी अवरोह में वक्र रूप से और सरल रूप से भी लिया जाता हैं। 'मध्यम स्वर' अधिकतर मुक्त सा रहता हैं।

अल्हैया-बिलावल के गपध, निध,प,ध,ग,मरे, गप, धनिसां, धनिध,प इस प्रकार के स्वरों के साथ गौड-मल्हार के मरे, प, मपधसां, ध, निप, मपम इस तरह के स्वरों का संयोग होने से यह राग स्पष्ट होता हैं।

वादी स्वर धैवत और संवादी गान्धार हैं। गानसमय दिवस का प्रथम प्रहर हैं।

आरोह :—

सा, रेग, मरे, ग, प, ध, निसां।

अवरोह :—

सांधनिधप, म,ग,म, मरे, प,म,ग, रेसा।

पकड स्वर :— गरे, गप, ध, निसां, धनिप, मपधसां, प, निधप, मपम, ग, मरे, सा।

होली की धमारों में इस राग के कीर्तन—पद प्रायः अधिकतर प्राप्त होते हैं। जो होरीदंडारोपनी (माह सुदि—१५) से डोल तक के समय में गाये जाते हैं। होरी के दूसरे रोज (डोल के दिन) होरी-धमार के कीर्तन इसी राग में जिस पद से सम्पन्न होते हैं, उस पद को यहां स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार प्रकाशित कर रहे हैं।

राग गौड-बिलावल—ताल त्रिताल, मात्रा—८

गोपी हो नंदराय-घर मांगन फगुवा आई।
प्रमुदित करत कुलाहल, गावत गारि सुहाई ॥१॥
× × × निकसी देत असीस, जीयो तेरो मोहनराई।
यह ब्रज 'माधोदास' रहों नित नंद दुवाई ॥१५॥

स्थायी

गपध	नि
गो–पी	–

×	२	०	३	×	२	०	३	
सां	नि–	––	धनि	धप	–म	गम	मरे	सा
हो	––	––	नं–	दरा	–य	––	घ–	र
–	––	म–	मग	मप	धनि	धप	मप	म
–	––	मां–	ग–	नफ	––	गु–	वा–	–
म	––	प–	गपध	नि				
आ	––	ई–	गो–पी	–				

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
–	––	––	रेंरेंरें	रेंसां	–रें	––	गं–	गंमं
–	––	––	प्रमुदि	तक	–र	––	त–	कु–
पं	गंमं	रें–	सांसां	–नि	प–	म–	मम	म
ला	––	––	हल	––	––	गा–	व–	त
प	धसां	––	निधप	मम	रेप	प–	गमध	नि
गा	––	––	री––	सुहा	––	ई–	गो–पी	–

राग देवगिरि–बिलावल (एक प्रकार)

सम्प्रदाय में दानवर्णन के कुछ भावात्मक पद बिलावल के अन्तर्गत पाये जाते हैं। प्राचीन संग्रहोंमें इस प्रकार के पदों का बिलावल के अन्तर्गत ही

समावेश किया गया है तथापि दान के पद राग 'देवगिरि' शीर्षक के अन्तर्गत भी दृष्टिगोचर होते हैं प्रचलित 'देवगिरि' बिलाबल से यह भिन्न थाट, जाति, वादी, संवादी, समय एवं अवरोहमें निषाद कोमल का प्रयोग तथा चलन इत्यादिमें कोई बिशेष भिन्नता दृष्टिगत नहीं होती। अतः यहां इस प्रकार को 'देवगिरि-बिलावल' से ही प्रसिद्ध कर रहे हैं।

राग देवगिरि-बिलावल (दान का बिलावल)

ताल–त्रिताल (आठ मात्रा)

गढते ग्वालिनि उतरी (हो) माथें :महीको माट।
आडो कन्हैया व्हे रह्यो, सो रोकत है बनबाट॥
नागरी दान दै॥१॥
कहाँकी हो तुम ग्वालिनी, हो कहा तिहारो नाम।
बरसाने की ग्वालिनी प्यारी राधा मेरो नाम।
मोहि घर जान दै॥२॥
× × × × × × × × × सुख बाढ्यो आनंद भयो, रही श्याम गुन गाय। सुन्दर सोभा देखि के, जन 'सूरदास' बलि जाय॥९॥ *

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि	धनि	–सा	–नि	सा–	गरे	मगरे	गनि सा
ग	ढते	–ग्वा	–लि	नी–	उ–	तरी–	–हो –
नि	धपनि	निसा	–नि	सारे	––	–नि	रेसा –
–	सी–स	मही	–को	–मा	––	––	–ट –

---

० इस प्रकार के पद मध्यम ग्राम से यानि मध्यम को षड्ज बनाकर गाये जाते हैं।

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
– गरे	म म	प –	ध प	नि सां	– रें	नि धप	मग रे
– आ–	डो क	न्है –	या –	– व्हे	– र	ह्यो ––	सो– –
– ग	ग ग	मरे ग	म प	म गरे	ग रेसा	– म	ग रे
– रो	क त	ब्र– ज	ब धू	बा –	– ट–	– ना	ग री
नि़ –	ध़ रे	सा –	– –				
दा –	– न	दे –	– –				

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि़ ध़	नि़ –	सा –	नि़ सा	– ग	रे म	गरे ग	नि सा
क हाँ	की –	हो –	तु म	– ग्वा	– लि	नी– –	हो –
– म	रे म	प –	ग म	नि ध	नि प	– –	प –
– क	हा ति	हा –	री –	ना –	– –	– –	म –

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
– मप	नि –	नि –	सां –	– रें	– सां	नि प	ध प
– बर	सा –	ने –	की –	– ग्वा	– लि	नो –	प्या री
म ग	ग रे	ग प	म –	गरे ग	– सा	म म	ग रे
रा –	धा –	मे –	री –	ना– –	– म	मो हि	ध र

ग	नि	ध	रे	सा	—	—
जा	—	—	न	दे	—	—

प्रत्येक तूक क्रमशः संचारी आभोग अनुसार।

राग धनाश्री

यह राग ग्रन्थोक्त तथा प्राचीन राग है। इस राग में भक्त नरसिह के पद पाये जाते हैं, किन्तु परम्परा की दृष्टि से हवेलीसंगीत में आज भी उस परम्परा की स्पष्ट झांखी होती हैं। आजकाल प्रचार में काफी थाट की धनाश्री अधिक दृष्टिगत होती है जो भीमपलासी के अंग से मिलती हैं। किन्तु अष्टछापपरंपरा में यह राग आसावरी थाट का है। आरोह में रे ध स्वर वर्ज्य हैं। जाति औडुव सम्पूर्ण है। स्वर ग ध नि कोमल है, किन्तु आरोह में निषाद स्वर तीव्र लिया जाता है। आरम्भ एवं कानडे इत्यादि बहुत कुछ रागोंमें इसी प्रकार आरोह में निषाद शुद्ध का प्रयोग होता ही है। अवरोह में प ग की संगति अवरोह में मनोहर दिखाई देती है। न्यास स्वर एवं वादी स्वर भी पंचम है, संवादी षड्ज है। षड्ज-पंचम का प्राधान्य के साथ मध्यम का भी महत्त्व है। उठाव नि स्वर से अधिक होता है। समय दिन का दूसरा प्रहर है। आसावरी थाट होने से तथा सम्प्रदाय के मंदिरों मे दूसरे प्रहर के सेवाप्रणाली में ही अधिकतर गाया जाता है। अतः समय सुसंगत कहा जायगा। धनाश्री राग को मांगलिक राग माना गया है।

आरोहावरोह : निसा, गम, प, नि, सां। निधपमग, पग, रेसा.

स्वरविस्तार :

(१) निसाग, मप, पधप, म, पग, गमप, ग, रेसा.

(२) रेनिसा, मप, गमप, नि ध प, प, धम, पग, गमप, गमग, रे.

(३) पप, गम, प, निसां, धप, गम, पग, रेसा.

(४) प, म प ग म, पनि, सां, निसां, मं गं रेंसां, रेंसां,
निधप, प निसां, गं गं रें सां, निसांरें, सां धप,
रें नि ध प, ग म प नि ध प, म प ग, नि, सा, ग म प ग
प ग, रे सा, नि सा ग म प,

राग धनाश्री-ताल आदि (त्रिताल मात्रा-८)

सबे मिलि मंगल गावो माई ।
आज लालको जन्मद्योस हे, बाजत रंग बधाई ॥१॥
आंगन लीपो चोक पुरावो, बिप्र पढन लागे वेद ।
करो सिंगार स्यामसुंदरको, चोवा चंदन मेद ॥२॥
आनंद-भरी नंदजूकी रानी, फूली अंग समाई ॥
'परमानंददास' तिहि अवसर, बहोत न्योछावरि पाई ॥३॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि	—	नि	नि	सां	—	सां	—	गं	—	रें	सां	सां	नि	ध	प
मं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	मा	ऽ	ई	स	बे	ऽ	मि	लि
—	नि	ध	ध	प	—	म	—	म	—	ग	म	प	ग	रे	सा
ऽ	मं	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	—	प	प	म	प	ग	म	प	प	नि	नि	सां	गं	रें	सां
आ	ऽ	ज	ला	ऽ	ल	का	ऽ	ज	न	म	द्यो	ऽ	स	हे	ऽ

नि	–	नि	नि	सां	–	सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	म	प	प
बा	ऽ	ज	त	रं	ऽ	ग	ब	धा	ऽ	ई	स	बे	ऽ	मि	लि

संचारी

×		२		०		२		×		२		०		३	
ध	–	ध	ध	नि	ध	प	–	प	–	प	म	प	नि	सां	–
आं	ऽ	ग	न	ली	ऽ	पो	ऽ	चो	ऽ	क	पु	रा	ऽ	वो	ऽ
नि	–	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	–	ग	म	प	–	ग	सा
वि	ऽ	प्र	प	ह	न	ला	गे	बे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ

"आभोग" अन्तरानुसार ।

राग धनाश्री–ताल धमार

रंगीलेरी छबीले नेना रसभरे, मानौं (नेना) नाचत मुदित अनेरे रे ।
खंजरीट मानौं महामत्त दोउ, केसेहु घिरत न घेरे रे ॥१॥
स्याम सेत राते रंग रंजित, मानौं चित्र चितेरे रे ।
'कुम्भनदास'प्रभु गोवरधनधर, स्याम सुमग तन हेरे रे ॥२॥

स्थायी

सां –
रं –

×					२		०			३			
नि	–	–	नि	–	–	–	सां	–	–	–	–	सां	रें
गी	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छ	ऽ
नि	सां	–	ध	–	प	–	प	म	–	म	–	–	–
बी	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	–	ग	म	प	म	प	ग	–	ग	रे	सा	–
र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	नौं	ऽ

प	—	—	प	—	प	—	म	प	—	ग॒	—	म	—
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	त	ऽ	मु	दि	ऽ	त	ऽ	अ	ऽ
प	—	—	नि	—	—	—	सां	—	—	—	—	सां	—
ने	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

अंतरा

×					२		०			३			
ध॒	—	—	प	—	प	—	म	प	—	ग॒	—	म	—
खं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	री	ऽ	ऽ	ट	ऽ	मा	ऽ	नों	ऽ
प	नि	—	सां	—	सां	—	रें	नि	—	सां	—	सां	—
म	हा	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	त्त	ऽ	दा	ऽ	उ	ऽ
गं॒	—	—	गं॒	—	गं॒	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
के	ऽ	ऽ	से	ऽ	हु	ऽ	घि	र	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
नि॒	ध॒	—	प	—	म	—	प	नि	—	सां	—	सां	रें
धे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

संचारी

×					२		०			३			
ध॒	—	—	ध॒	—	ध॒	—	नि॒	ध॒	—	प	—	म	—
स्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	स्वे	ऽ	ऽ	त	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग॒	—	ग॒	—	म	—	प	ग॒	—	रे	—	सा	—
ते	ऽ	ऽ	रं	ऽ	ग	ऽ	रं	—	ऽ	जि	ऽ	त	ऽ

प	–	–	प	–	–	–	म	प	–	ग	–	म	–
मा	ऽ	ऽ	नों	ऽ	ऽ	ऽ	चि	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	चि	ऽ
प	–	–:	नि	:–	–	–	सां	–	–	–	–	–	–
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

आभोग

×					२		०			३			
गं	गं	–	गं	–	रें	–	सां	सां	–	सां	–	सां	–
कुं	भ	ऽ	न	ऽ	दा	ऽ	ऽ	स	ऽ	प्र	ऽ	सु	ऽ
ध	प	–	ग	–	म	–	प	नि	–	सां	–	सां	–
गो	ऽ	ऽ	व	ऽ	र	ऽ	ध	न	ऽ	ध	ऽ	र	ऽ
गं	–	–	गं	–	रें	–	नि	सां	–	ध	प	ग	म
स्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	भ	ग	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
प	–	–	नि	–	–	–	सां	–	–	–	–	सां	रें
हे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

राग आसावरी

यह राग प्राचीन है। नित्यक्रम की कीर्तनप्रणाली में अधिकतर शीतकाल में राजभोग-समय गाया जाता है। तदतिरिक्त बधाई पालना होली इत्यादि त्यौहारों में भी इस राग के पद प्राप्त होते हैं, जो षाडव–संपूर्ण जाति से तथा आरोह में गान्धार निषाद वर्ज्य करके गाया जाता है, किन्तु सम्प्रदाय की प्राचीन प्रणालीअनुसार आरोह में दुर्बल रूप से निषाद का प्रयोग किया जाता है।

थाट आसावरी है। स्वर गान्धार धैवत और निषाद कोमल एवं बाकी के स्वर शुद्ध हैं। जाति प्रचार में औडव–सम्पूर्ण है, किन्तु सम्प्रदाय की दृष्टि से

षाडव–संपूर्ण कहा जाय तो अनुचित नहीं है । इस प्रकार का प्रचार में षाडव–संपूर्ण जाति का राग 'जोनपुरी' नाम से प्रसिद्ध है, किन्तु ७५ वर्ष पहिले कांकरोली वाले गो. श्री. बालकृष्णलालजी महाराजश्री का मन्तव्य यह था कि आजकल जो रिषभ कोमल की आसावरी गाई जाती हैं वह जोनपुरी राग होना चाहिये ऐसा हमारे पिताजी को आपने कहा था ।

वादी धैवत और संवादी गान्धार है । समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग की विशेषता गान्धार पंचम और धैवत स्वरों पर निर्भर है । अवरोह में यह राग स्पष्ट होता है ।

पकड़–रे, मप, निध, प,

औड़व–सम्पूर्ण आसावरी के अनुसार स्वरविस्तार और आरोह-अवरोह निम्न प्रकार लिखे गये हैं ।

आरोहावरोह—सा, रेमप, ध, सां । सां नि ध, प, म, ग, रे, सा.

स्वरविस्तार—(१) सा–, रेमप–, धप–, मप–, निध–, प–,
धमपधग–रे–सा–, रेमप–निध–प.

(२) सा–रेसा–, रेमपधग–रेसा–, रेमप–निध–प–,
सां–निध–पधमपग–रेसा–, रेमप–, निध–प–.

(३) सा–, रेरेसा–, ग–रेसा–, रे सा – नि ध –,
नि ध –, प –, म प ध –सा–, रेमपधग–रेसा–
रेमप–निध–प– ।

(४) मपध–धसां–रें सां–, गंगंरें सां–, रें सांनिध–,
सां–निध–, प–धमपधग–रेसा, रेमप–निध–प– ।

राग आसावरी (कोमल रे) प्रकार–ताल चर्चरी

सुभग ललना माई गोविंद गावे ।
राग आसावरी चरचरी ताल धर मधुर सुर मुरलिका मोहन बजावै ॥१॥
खसित उडुगन सफल स्वेत रजनी माई अजहु लगि नागर तोहि बुलावे ।
नाहीं जानत कवन प्रीत हियमें बसी तुव नाम संवलित सुरगति लजावै ॥२॥
विपिन तमचर घोख अरुन प्राची दिसा चक्रवाकी पतहि मोह उपजावे ।
सुन 'कृष्णदास' पिय लाल गिरिवरधरन रसिकवर भूप काहे न जिय भावे ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	सां	ध	ध	नि	ध	प	धम	प	मप
सु	भ	ग	ल	ल	ना	—	मा—	—	ई—
ग	—	रे	—	सा	रे	म	प	धम	प
गो	—	विं	—	द	गा	—	वे	——	—

अंतरा

×			२		०		३		
म	प	ध	ध	—	सां	—	सां	सां	—
रा	—	ग	आ	—	सा	—	व	री	—
ध	ध	सां	सां	—	गं	रें	सां	ध	प
च	र	च	री	—	ता	—	ल	ध	र
प	गं	गं	रें	सां	रें	—	ध	पध	नि
म	धु	र	सु	र	मु	र	लि	का—	—

ध	प	ध	म	प	ग	रे	म	प	मप
मो	—	ह	न	ब	जा	—	—	वे	——

संचारी

×			२		०		३			
सा	ध	ध	ध	ध	प	प	ध	प	प	
स्व	सि	त	उ	डु	ग	न	स	क	ल	
प	ध	ध	सां	सां	ध	—	ध	प	—	
स्वे	—	त	र	ज	नी	—	भ	ई	—	
प	ध	म	प	ध	म ग	—	रे	—	सा	
अ	ज	हु	ल	गि	ना	—	ग	—	र	
सा	—	ध	—	ध	सा	—	रे	—	सा	
तो	—	हि	—	बु	ला	—	वे	—	—	

"आभोग" अन्तरानुसार ।

राग आसावारी—ताल चौताल

सब मिलि आवो गावो बजावो नंद महर—घर बाजत बधाई माई ।
सप्त सुरन तीन ग्राम इकईस मूरछना उनचास कोटि तान गाइये ॥१॥
आरोही अवरोही अस्ताई संचारी, औडव संपूरन आसावरी गाइये ।
'धौंधी'के प्रभु तुम बहुनायक गुनिजन सब मिल गाइये ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
रे	म	प	नि	ध	—	प	—	म	—	ग	—
स	ब	मि	ल	आ	—	वो	—	गा	—	वो	—
रे	रे	—	सा	सा	—	रे	रे	म	म	प	प
ब	जा	—	वो	नं	—	द	म	ह	र	ध	र
ध	—	ध	ध	रें	सां	नि	ध	प	मप	ग	रेसा
बा	—	ज	त	ब	धा	—	ई	—	मा—	ई	——

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	ध	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
स	—	त	सु	र	न	ती	—	न	ग्रा	—	म
ध	ध	—	सां	—	सां	रें	—	सां	ध	—	प
इ	क	—	ई	—	स	मू	—	र	छ	—	ना
प	गं	—	रें	—	सां	रें	—	सां	नि	ध	प
उ	न	—	चा	—	स	को	—	टि	ता	—	न
म	प	नि	ध	पध	मप	ग	रेसा	रे	म	प	नि
गा	—	—	इ	——	——	ये	——	स	ब	मि	ल

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सा	—	ध	ध	—	ध	ध	ध	नि	ध	प	प
आ	—	—	रो	—	ही	अ	ब	—	रो	—	ही
ध	ध	ध	सां	—	सां	रें	सां	—	ध	—	प
अ	—	—	स्ता	—	ई	सं	—	—	चा	—	री
प	ध	म	म	प	ध	ग	—	रे	रे	—	सा
औ	—	—	ड	—	व	सं	—	पू	र	—	न
सा	सा	रे	म	प	प	ध	—	नि	ध	—	प
आ	सा	—	व	—	री	गा	—	—	इ	—	ये

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	ध	—	—	सां	—	—	सां	—	सां
धों	—	—	धी	—	—	के	—	—	प्र	—	भु
ध	ध	—	सां	—	सां	गं	रें	सां	ध	—	प
तु	म	—	ब	—	हु	ना	—	—	य	—	क
प	गं	—	रें	रें	सां	रें	सां	—	ध	—	प
गु	नि	—	ज	—	न	स	ब	—	मि	—	ल
म	प	नि	ध	पध	मप	ग	रेंसा	रे	म	प	नि
गा	—	—	—	—	इ	ये	—	स	ब	मि	ल

राग आशावरी–ताल चौताल

कृष्णनाम जब तें स्रवन सुन्योरी आली, भूलिरी भवन हों तों बावरी भईरी ।
भरि भरि आवे नेन चित्त हु न परे चेन तनकी दसा कछु ओर भईरी ॥१॥
जेतेक नेम धर्म कीनेरी में बहुविध अंग अंग भई हों तो स्रवन भईरी ।
“नंददास” जाके नामस्रवन सुनें यह गति माधुरी मुरति केधों केसी दईरी॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ध	–	ध	ध	प	प	ध	म	प	ग	रे	सा
कृ	–	ष्ण	ना	–	म	ज	ब	–	तें	–	–
सा	सा	रे	नि	ध	ध	सा	–	सा	रे	–	सा
स्र	व	–	न	–	सु	न्यो	–	री	आ	–	ली
सा	–	रे	म	म	म	प	प	–	ध	–	ध
भू	–	ली	री	–	भ	व	न	–	हों	–	तों
सां	–	गं	रें	सां	सां	रें	नि	ध	प	म	प
बा	–	व	री	–	भ	ई	–	–	–	री	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	–	ध	–	ध	सां	–	सां	सां	–	सां
भ	रि	–	भ	–	रि	आ	–	वे	ने	–	न
ध	ध	–	सां	–	रें	गं	रें	सां	रेंनि	ध	प
चि	त्त	–	हु	–	न	प	रे	–	चे–	–	न

प गं̱	— रें	— सां	रें सां	रें नि̱	ध̱ प
त न	— की	— द	सा —	— क	— छु
नि̱ ध̱	प ध̱	म प	ग̱ —	रे म	प प
ओ —	— र	— भ	ई —	— —	री —

संचारी

×	०	२	०	३	४
म —	— प	— प	ध̱ —	ध̱ प	— प
जे —	— ते	— क	ने —	म ध	— मं
ध̱ प	ध̱ म	प मप	ग̱ ग̱	— रे	— सा
की —	ने री	— में—	व हु	— बि	— ध
सा —	रे म	प प	ध̱ ध̱	नि̱ ध̱	प प
अं —	ग अं	— ग	भ ई	— हौं	— तों
नि̱ ध̱	प ध̱	म प	ग̱ —	रे रे	— सा
त्र व	— न	— भ	ई —	— —	री —

आभोग

×	०	२	०	३	४
म —	प ध̱	— ध̱	सां —	सां सां	— सां
नं —	द दा	— स	जा —	के ना	— म

ध	ध	ध	सां	सां	—	रें	सां	रें	नि	ध	प
स	व	न	मु	ने	—	य	ह	—	ग	—	ति
प	—	गं	रें	—	सां	रें	सां	—	ध	—	प
मा	—	धु	री	—	मु	र	ति	—	कै	—	धौं
प	नि	ध	पध	म	प	ग	—	रे	म	प	—
के	—	—	सी—	—	द	ई	—	—	—	री	—

राग आसावरी–ताल त्रिताल (मात्रा ८)

तुम नंद(व्रज) रानी के लाला, अहो दधि मथत सुहाइ कें लाला ।
तुम पर वारी हो लाला ॥ध्रु.॥

दिव्य कनिक को पालनो लाल, रतनजटित नगहीर ।
गजमोतिन के झूमिका होलाला, ऊपर दच्छिन चीर ॥१॥
कहति जसोदा सुनि मेरे 'गोविंद,' लेहु कनिया चढाई ।
जो सोवे तो पालनें जुलाऊं नातर, आंगन बेठि खिलाई ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२	०	३	×	२	
रे	मप	सांध	—प	—ध	म पध	मपग	रेग	सा
तु	मनं	दरा	—नो	—के	—ला—	——ला	——	—
म	म प	धसां	——	रेंरे	रें सां	सांरें	निसां	ध
अ	होद	धि—	——	मथ	त—	सुहा	——	ई

---

१ पाठांतर :– तुम नंद(व्रज)रानी के लाला

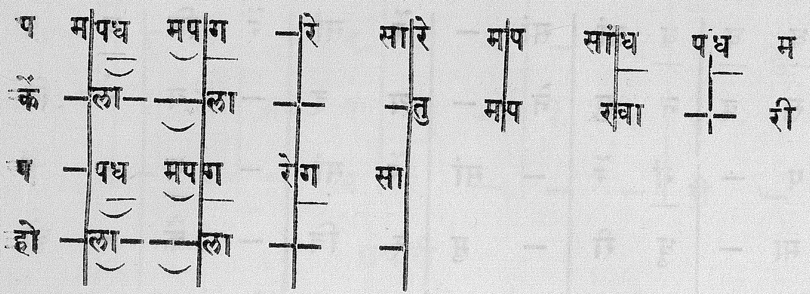
प मपध मपग —रे सारे मप सांध पध म
कँ —ला— ——ला —— —तु मप रवा —— री
प —पध मपग रेग सा
हो —ला— ——ला —— —

अंतरा

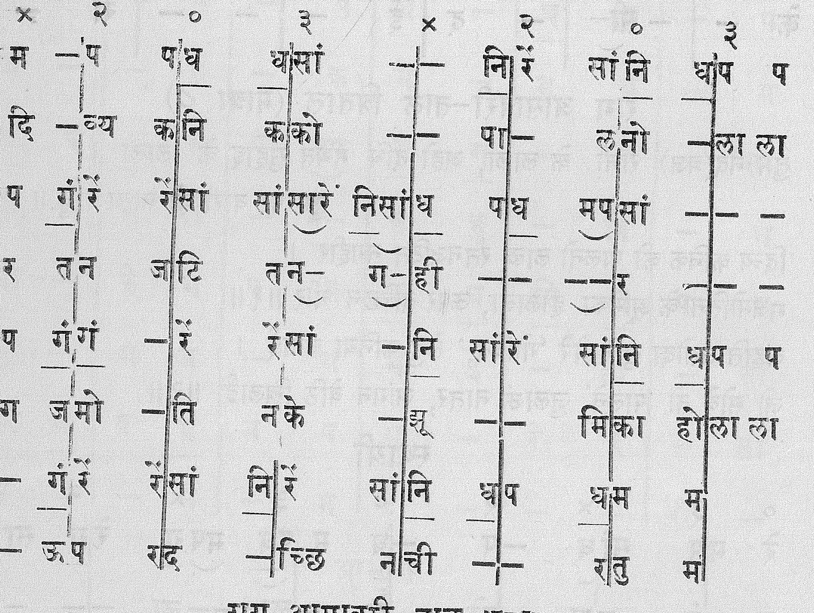
× २ ० ३ × २ ० ३
म —प पध धसां —— निरें सांनि धप प
दि —व्य कनि कको —— पा— लनो —ला ला
प गंरें रेंसां सांसारें निसांध पध मपसां —— —
र तन जटि तन— ग—ही —— ——र —— —
प गंगं —रें रेंसां —नि सांरें सांनि धप प
ग जमो —ति नके —झू —— मिका होला ला
— गंरें रेंसां निरें सांनि धप धम म
— ऊप रद —च्छि नची —— रतु म

राग आसावरी–ताल धमार

जाको मन लाग्यो गोपालसों ताहि ओर केसे भावे हो ।
ले कर मीन दूध में राखों, जल बिनु सचु नहिं पावे हो ॥१॥
ज्यों सूरा रन वूमि चलत हे, पीर न काहू जनावे हो ।
ज्यों गूंगो गुर खाय रहत हे, मुख न स्वाद बतावे हो ॥२॥

जैसें सरिता मिली सिंधु में, उलटि प्रवाह न आवे हो ।
तैसेंइ 'सूर' कमलमुख निरखत, चित इत उत न डुलावे हो ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	ध॒	—	नि॒	ध॒	सां	सां	—	सां	—	—	—
जा	—	—	को	—	—	—	म	न	—	ला	—	—	—
रें	नि॒	—	सां	रें	रें	—	नि॒	ध॒	—	प	—	—	—
ग्यो	—	—	गो	—	पा	—	—	ल	—	सों	—	—	—
नि॒	—	—	ध॒	प	म	प	ग॒	—	—	रे	—	सा	—
ता	—	—	हि	—	औ	—	र	—	—	के	—	से	—
रे	म	—	प	—	सां	—	ध॒	—	—	प	—	ध॒	—
भा	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	—	ध॒	—	ध॒	—	सां	—	—	सां	—	—	—
ले	—	—	क	—	र	—	मी	—	—	न	—	—	—
सां	नि॒	—	सां	रें	सां	—	नि॒	ध॒	—	प	—	—	—
दू	—	—	ध	—	में	—	रा	—	—	खो	—	—	—
प	गं॒	—	गं॒	—	गं॒	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
ज	ल	—	बि	—	नु	—	स	चु	—	न	—	हिं	—

रें	नि	–	सां	रें	नि	सां	ध	प	–	ध	म	प	ध
पा	–	–	वे	–	–	–	हो	–	–	–	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	नि	–	सां	–	–	सां	–	सां	–
ज्यों	–	–	सू	–	–	–	रा	–	–	र	–	न	–
नि	–	–	ध	–	ध	–	नि	ध	–	प	–	–	–
घू	–	–	मि	–	च	–	ल	त	–	है	–	–	–
नि	–	–	ध	–	प	–	ग	–	–	रे	–	सा	–
पी	–	–	र	–	न	–	क	–	–	हू	–	ज	–
रे	म	–	प	–	नि	–	ध	–	–	प	–	–	–
ता	–	–	वे	–	–	–	हो	–	–	–	–	–	–

''आभोग'' अन्तरानुसार।

(आसावरी राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपि के लिए ''संगीतसुबोधिनी'' अेवम् ''संगीतकीर्तनपद्धति'' ग्रन्थ को देखिये)

राग असावरी–ताल धमार

गिरिधरलाल पालनें झूलें, जसुमति आप जुलावे हो।
देखि देखि मुख कमलनयनको, बालचरित्र जस गावे हो ॥२॥
कबहुंक सुरंग खिलोना ले ले, नानाभांत खिलावे हों।
चुटकी दे दे लाड लडावें, अरु कर ताल बजावे हो ॥२॥

पुत्र सनेह चुचात पयोधर, आनंद उर न समावे हो।
चिर जीवो नंद महरि को ढोटा, 'सूरदास' हुलरावे हो ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
गि	रि	—	ध	—	र	—	ला	—	—	ल	—	पा	—
नि	नि	—	सां	—	रें	सां	नि	ध	—	प	—	—	—
—	ल	—	नें	—	—	—	झू	—	—	लैं	—	—	—
नि	नि	ध	प	ध	म	प	ग	—	—	रे	—	सा	—
ज	सु	—	म	—	ति	—	आ	—	—	प	—	झु	—
रे	म	—	प	—	सां	—	ध	प	—	ध	म	प	ध
ला	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
दे	—	—	खि	—	दे	—	—	खि	—	मु	—	ख	—
नि	नि	—	सां	—	रें	सां	नि	ध	नि	ध	—	प	—
क	म	—	ल	—	न	—	य	न	—	को	—	—	—
प	—	गं	—	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
बा	—	—	ल	—	च	—	रि	त्र	—	ज	—	स	—

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	रें	नि	ध	प	—	ध	म	म	ध
गा	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	सां	—	ध	—	नि	ध	सां	सां	—	सां	—	सां	—
क	व	—	हुं	—	क	—	सु	रं	—	ग	—	खि	—
नि	—	—	सां	नि	रें	सां	नि	ध	—	प	—	—	—
लो	—	—	ना	—	—	—	ले	—	—	ले	—	—	—
नि	—	—	ध	—	म	प	ग	—	—	रे	—	सा	—
ना	—	—	ना	—	—	—	भां	—	—	ति	—	खि	—
रे	म	—	प	—	नि	ध	ध	प	—	रे	म	प	—
ला	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार।

राग सामेरी

यह राग प्राचीन है। सामेरी राग का ग्रन्थों में सांवेरी नाम से भी उल्लेख किया गया है। यह राग अष्टछाप के समय में अधिक प्रचार में था। सम्प्रदाय में नित्यसेवाक्रम के कीर्तनों में यह राग का प्रयोग आजकल दृष्टिगत नहीं होता। इन्द्रमानभंग इत्यादि नैमित्तिक प्रणाली में इस राग के पद गाये जाते हैं, किन्तु हमें शुद्ध और परंपरागत का प्रामाणिक स्वरूप प्राप्त न होने से इस राग के पदों की

स्वरलिपि और विवरण का अत्र केवल उल्लेख मात्र किया जा रहा है। दाक्षिणात्य संगीतपद्धति में यह राग उत्तरीय पद्धति के 'दुर्गा' राग के समान गाया जाता है, जो उत्तरीय पद्धति से भिन्न है। स्मृति में है वहाँ तक यह राग आसावरी थाट का है तथापि कोई शुद्ध धैवत का भी उसमें प्रयोग करते हुए सुना है। और प्रातःकालीन सेवा-क्रम का यह राग माना जाता है। कुछ कीर्तनकार सामेरी को 'सामेरी बिलावल' मानते हैं। इस प्रकार के पद का उदाहरण-बिलावल के कीर्तनों में जो चौखड़ा गाये जाते हैं उसीको 'सामेरी बिलावल कहते हैं।

मुझे स्मृति में है वहां तक निम्न प्रकार परंपरासे अधिक अनुकूल होगा। आरोहमें ग, नि वर्ज्य, अवरोहमें कवचित नि कोमल का दुर्बल रूपसे प्रयोग किया जाता है। आरोहवरोह :— सा, रेम, प, धसां। सां, धप, म, गरेसा।

राग तोडी

सम्प्रदाय के संग्रहों में तोडी राग का उल्लेख टोडी नाम से प्राप्त होता है। सीतकाल में राजभोगसमय गाये जानेवाले नित्य के पदों में तोडी राग महत्त्व का है। बधाई और त्यौहारों के कीर्तनों में भी इस राग के पद प्राप्त होते हैं।

मुख्य थाटो में भी तोडी राग का थाट के नामों में उल्लेख किया गया है। अतः तोडी राग तोडी थाट में से उत्पन्न होता है। रे, ग, ध स्वर कोमल और म तीव्र है। यह राग सम्पूर्ण है। वादी धैवत और संवादी गान्धार है। समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग में धैवत की अपेक्षा पंचम का प्रमाण कुछ कम है। इस राग की विशेषता रे, ग, सा, और ध स्वरो में है।

आरोहवरोह :— सा, रेग, म प, ध, निसां सां, निध, प, म, ग, रे, सा

पकड :- धनिसा, रेग, रे, सा, म, ग, रेग, रेसा.

स्वर-विस्तार :-

१. सा, नि़सा, रे, नि़ ध़, नि़ ध़, म ध़, नि़ सा, ध़ नि सा,
रे ग रे सा, म ग, रे, सा, म ध नि ध, प, म ध मग,
रे, सा, नि़, सा रे ग ।

२. नि साग म प, ग म प, ध, प, सां, निध, प, मप ध
नि ध प, म प धम ग, नि़, सारेग, ध म ग,
रे ग, रे, सा, नि़, सा रे ग ।

३. म़ ग, म ध, सां, सां, रें, सां, रें गं रें सां, मं गं, पं,
म गं, रें, सां, नि सां, रें, नि ध, रें नि ध, प, म ध निध, प,
मपध, म ग, गं, रें, सां, निसां रें. निध, प, मध नि ध, प,
म ध नि ध, म ग, रे म, ध म ग, ग, रे, सा, निरे, सा ।

राग तोडी-ताल चौताल

हेली रसमय श्रीवल्लभसुत, प्रगट भये आज ।
अंग अंग धृति तरंग मधुरावलि केलि प्रसंग, दृग विलास
भौंह भाल कमनीय साज ॥१॥
लीला अमृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल, स्मरन करे
होत निहाल भावकी बांधे पाज ।
'पद्मनाभ' वागधीसकुंवर केलिकला अखिल, अवगाहत प्रेम-
सिंधु व्रजजन-सिरताज ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
									प	ग̱	म॑
									हे	—	ली
ध̱	—	प	प	—	प	म॑	ग̱	रे̱	ग̱	रे̱	सा
र	—	स	म	—	य	श्री	व	ल्ल	भ	सु	त
प	प	प	ग̱	म॑	ध̱	म॑	ग̱	रे̱सा	म॑ग̱	म॑	प
प्र	ग	ट	भ	ये	—	आ	—	ज—	हे—	—	ला

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	ग̱	म॑	—	ध̱	नि	सां	सां	सां	—	सां
अं	—	ग	अं	—	ग	धृ	ति	त	रं	—	ग
ध̱	ध̱	नि	सां	सां	सां	गं̱	रें̱	रें̱	सां	—	सां
म	धु	रा	—	व	लि	के	लि	प्र	सं	—	ग
ध̱	ध̱	गं̱	गं̱	—	गं̱	रें̱	गं̱	रें̱	सां	—	सां
ह	ग	वि	सा	—	ल	भ्रौं	—	ह	भा	—	ल
नि	ध̱	—	प	—	प	म॑	ग̱	रे̱ग̱	प	ग̱	म॑
क	म	—	नी	—	य	सा	—	ज—	हे	—	ली

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	ग॒	—	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	प	—	प
ली	—	—	ला	—	अ	मृ	त	र	सा	—	ल
ध॒	—	ध॒	नि	सां	सां	गं॒	रें॒	—	सां	—	सां
प्रे	—	म	भ	क्ति	के	प्र	ति	—	पा	—	ल
नि	नि	ध॒	ध॒	प	—	म॑	ग॒	ग	रे॒	—	सा
स्म	र	न	क	रे	—	हो	त	नि	हा	—	ल
ध़॒	—	—	ग॒	—	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा	—	सा
भा	—	—	व	—	की	बां	—	घे	पा	—	ज

‘आभोग’ अन्तरानुसार ।

राग तोडी—ताल चौताल

सप्त सुरन तीन ग्राम इकईस मूरछना उनचास कोटि तान मंडलमधि:गावे ।
चारुकरन हस्तक सिर नेन भेद भांति भांति उपजत गति नित नूतन कर नचावे ॥१॥
ध्रुम धिकिट थुंग थुंग कु कुझां झिनकिट धुमकिट धुम मृदंग वजावे ।
‘रसिक’प्रीतम-छबि निहार देवजुवति मोहत मन उमगि उमगि: विविध
कुसुम बरखत सुख पावे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ग॒	—	ग॒	रे॒	सा	सा	ध़॒	—	नि़	सा	रे॒	ग॒
स	-	प्त	सु	र	न	ती	—	न	ग्रा	—	म

म॑	ग॒	—	म॑प	ध॒	प	म॑	ग॒	रे॒	रे॒	सा	—
इ	क	—	(ई—)	—	स	मू	र	—	छ	ना	—
ग॒	रे॒	ग॒	म॑	प	प	ध॒	—	नि	सां	—	सां
उ	न	—	चा	—	स	को	—	टि	ता	—	न
नि	ध॒	ध॒	प	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	रे॒	सा	—
मं	ड	ल	म	—	धि	गा	—	—	वे	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म॑	ग॒	ग॒	म॑	ध॒	ध॒	नि	—	सां	सां	सां	सां
चा	—	रु	क	र	न	ह	—	स्त	क	सि	र
नि॒	—	सांरें॒	गं॒	रें॒	सां	नि	—	सां	नि	ध॒	ध॒
ने	—	(न—)	भे	—	द	भां	—	ति	भां	—	ति
म॑	ध॒	नि	सां	—	नि	ध॒	प	म॑	ग॒	म॑	प
उ	प	—	ज	—	त	ग	—	ति	नि	—	त
ध॒	नि	ध॒	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	रे॒	सा	सा
नू	—	त	न	—	क	र	—	न	चा	—	वे

राग तोडी–ताल चौताल

बहुत प्रसन्न भये पिय प्यारी टोडी राग बेनुधर गायो ।
सुर संगीत बंधान मधुर धुनि एसोइ अदभुत भेद वतायो ॥१॥
बीन तरंग उपजत नानारंग प्रतिछिन ओर ही ओर मिलायो ।
‘चतुर्भुजदास’ स्वामिनी गुननिधि रसिकराय गिरिधरन रिझायो ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ध॒	प	—	ग॒	म॑	प	ध॒	—	प	प	—	प
ब	हु	—	त	—	प्र	स	—	—	न्न	—	भ
म॑	ग॒	—	ग॒	—	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा	—	सा
ये	—	—	पि	—	य	प्या	—	—	री	—	—
नि़	सा	—	म॑	ग॒	म॑	ध॒	—	—	नि	सां	—
टो	-	—	डी	—	—	रा	—	—	ग	—	—
सां रें॒	गं॒	रें॒	सां	—	सां	नि	ध॒	—	प	ग॒	म॑
बे—	—	नु	ध	—	र	गा	—	—	यो	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
ध॒	प	म॑	ग॒	—	म॑	ध॒	नि	सां	सां	—	सां
सु	र	—	सं	—	—	गी	—	—	त	—	बं

ध	—	—	नि	सां	रें	गं	रें	—	सां	—	सां
धा	—	—	न	—	म	धु	र	—	धु	—	नि
नि	ध	—	गं	—	गं	रें	—	—	सां	—	सां
ए	—	—	सो	—	इ	अ	—	—	द्रु	—	त
नि	ध	—	प	—	म	म	ग	—	रे	ग	म
मे	—	—	द	—	ब	ता	—	—	यो	—	—

राग तोडी—ताल चौताल

ए कहुँ उमड घूमड गरजत्त हो पिय कहुँ बरखत कहुँ उधरजात ।
कहुँ दमकत कहुँ चमकत चपला जोंइ कहुँ और न ठहरात ॥१॥
स्यामघन के लच्छन तुमही पे स्यामघन वृथा मेह आडंबर प्रांत ।
'मुरारिदास'प्रभु तिहारे बाम चरन पूजियेजु को किनकी कही न
बात को पत्यात ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
ग	रे	ग	मप	ध	—	प	म	प	प	ध	म
ए	क	—	हुँ—	उ	—	—	म	—	ड	धू	—
ग	ग	—	ग	रे	ग	—	म	प	ध	म	ग
—	म	—	ड	ग	र	—	ज	—	त	हो	—
—	रे	—	सा	नि	सा	—	ग रे	ग	ग	म	ग
—	पि	—	य	क	हु	—	ब	—	र	ख	त

	ग										ध
—	रे	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	ग	—	म
—	क	—	हुँ	उ	ध	र	जा	—	—	—	त

अंतरा

३		४		×		०		२		०	
मं	ग	—	म	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
क	हुँ	—	द	—	म	क	त	—	क	—	हुँ
सां	ध	—	नि	सां	रें	गं	रें	—	सां	—	निध
च	म	—	क	—	त	च	प	—	ला	—	जों—
ध	नि	ध	प	म	ग	ग	गं	—	रें	—	सां
इ	—	—	क	—	हुँ	ठो	—	—	र	—	न
नि	ध	सां	नि	ध	प	—	धम	ग	रे	ग	म
ठ	ह	—	रा	—	त	—	इ—	—	क	—	हुँ

राग तोडी–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

हों पनियां न जैहों मेरी मटुकियाँ झटकि कर पटकी ।
अचानक आन गही हो जु सांवरे मेरे संगकी सव सब सटकी ॥१॥
कालिह दुपहर गई हों कुंजमें को जानें मेरे या घटकी ।
प्रभु कल्यान गिरिधरजुकी माधुरी मेरे दो नैननि बीच अटकी ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
ध	ध	मं	ग	ग	रे	ग	रे	—	सा
प	नि	यां	—	न	जै	—	हों	—	—

ध॒	—	ग॒	—	ग॒	रे॒	रे॒	सा	—	—
मे	—	री	—	म	ठु	कि	याँ	—	—
म॑	ग॒	म॑	ध॒	नि	ध॒	ध॒	पम॑	ग॒	म॑
झ	ट	कि	क	र	प	ट	की—	—	हों

अंतरा

×		२			०		३		
ध॒	प	म॑ग	म॑	ध	नि	सां	सां	—	सां
अ	चा	न—	—	क	आ	—	न	—	ग
ध॒	—	नि	सां	सां	रें॒	—	रें॒	सां	—
ही	—	हो	—	जु	सां	—	व	रे	—
ध॒	—	गं॒	रें॒	गं॒	रें॒	—	सां	सां	ध॒
मे	—	रे	—	—	सं	—	ग	की	—
म॑	ध॒	नि	सां	नि	ध॒	ध॒	पम॑	ग॒	म॑
स	ब	स	—	ब	स	ट	की—	—	हो

संचारी

×		२			०		३		
प	—	म॑	ग॒	म॑	ध॒	ध॒	प	—	प
का	—	लिह	—	दु	प	ह	र	—	ग

म॑	ग	म॑	ध	–	प	ग	म॑	ग	–
ई	–	हों	–	–	कुं	–	ज	में	–
रे	ग	ध	प	ध	म॑	ग	रे	–	सा
का	–	जा	–	–	नें	–	मे	–	रे
ध	–	ग	रे	ग	रे	–	सा	–	–
या	–	घ	–	ट	की	–	–	–	–

राग तोडी–ताल धमार

नीको बन्यो गोकुल गाम सुहावनो जहां खेलत है हरि हो होरी ।
इत हि सकल ब्रजके बालक उत झुंडन जुरि आई तरुनी तिनमें राधा गोरी ॥१॥
बिबिध भांति बाजे बाजत नवल कुंमकुम केसर अरगजा घोरी ।
रतनजटित पिचकाई कर गहि छिरकत तकि मुदित परस्पर नवल
किसोर किसोरी ॥२॥
यह बिघ हरि खेलत झेलत रससिंधुतरंग भरी ब्रजखोरी ।
मोहि अमरवधु निरख बरख कुसुमन रघुबीर फिरत संग भरि भरि झोरी ॥३॥

स्थायी

										म॑	ग	ध	ध
										नी	–	को	–
×					२		०			३			
सां	सां	–	नि	ध	प	प	ध	प	–	म॑	ग	ध	ध
ब	न्यो	–	गो	–	कु	ल	गा	–	–	म	–	–	सु

म	ग	—	रे	—	सा	—	सा	नि	सा	रे	ग	म	प
हा	—	—	व	—	नो	—	ज	हाँ	—	खे	—	ल	त
ध	—	—	म	ग	रे	ग	रे	—	सा	म	ग	म	ध
हे	—	—	ह	रि	हो	—	हो	—	री	नी	—	को	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	ध	ध	नि	सां	सां	—	गं	रें	रें	सां	—	सां	सां
इ	त	हि	स	क	ल	—	ब्र	ज	के	बा	—	ल	क
रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	ध	गं	रें	सां	नि	ध	प
उ	त	झुं	ड	न	जु	रि	आ	—	ई	त	रु	नी	—
म	प	ध	म	ग	रे	ग	रे	—	सा	म	ग	म	ध
ति	न	में	रा	—	धा	—	गो	—	री	नी	—	को	—

संचारी

×					२		०			३			
ध	ध	ध	प	—	प	—	म	ग	म	ध	—	प	प
वि	वि	ध	भां	—	ति	—	बा	—	जे	बा	—	ज	त
म	ध	—	म	ग	म	ध	सां	नि	ध	प	प	म	ग
कु	म	—	कु	—	के	—	स	र	अ	र	ग	जा	—
म	ग	—	म	ग	ग	—	रे	ग	रे	सा	—	—	—
—	—	—	न	व	ल	—	घो	—	—	री	—	—	—

राग गुर्जरी (तोडी)–ताल धमार

होरी खेलत मनमोहनसों, अबीर लिये भर झोरी ।
एक गावत एक मृदंग बजावत, एक अलापत हे किसोरी ॥१॥
एक गोरी एक भोरी सांवरी सुरत, एक अबला दीन की थोरी ।
चतुरबिहारीकी बानिक निरखत, डारत हे तृन तोरी ॥२॥

स्थायी

३					×						२			०		
ध॒	म॑ग॒	ग॒	म॑	|	ध॒	—	—	म॑	ग॒	|	रे॒	ग॒	|	रे॒	सा	सा
हो	री–	खे	ल	|	त	—	—	म	न	|	मो	—	|	ह	न	सों
ध॒	ध॒	ग॒	—	|	म॑	ग॒	—	ध॒	म॑ध॒	|	सां	नि	|	ध॒	म॑	ग॒
अ	बी	र	—	|	लि	ये	—	भ	—	|	र	—	|	झो	—	री

अन्तरा

×						२			०				३			
ध॒	म॑	ग॒	म॑	ध॒	|	सां	—	|	सां	—	—	|	सां	—	रें॒	सां
ए	क	—	गा	—	|	व	—	|	त	—	—	|	ए	—	क	—
ध॒	ध॒	—	निं	सां	|	सां	—	|	रें॒	गं॒	—	|	रें॒	—	सां	—
मृ	दं	—	ग	व	|	जा	—	|	व	त	—	|	ए	—	क	—
रें॒	नि	ध॒	म॑	ध॒	|	सां	नि	|	ध॒	म॑	ग॒	|				
अ	ला	—	प	त	|	हे	कि	|	सो	—	री	|				

राग सारंग (बृन्दाबनी)

'सारंग' राग कों शास्त्रोक्त, प्राचीन एवं लोकप्रिय राग माना जाता है । इस राग के विविध प्रकारो में से हवेली-संगीतपरंपरा में ६ प्रकारके सारंग गाये जाते हैं, कोई ८ अष्ट-प्रकार भी मानते हैं । इन सभी प्रकारों का गान-समय दोपहर का सर्वसम्मत है । ग्रन्थों में कहीं दिन का तृतीय प्रहर का भी उल्लेख प्राप्त होता है ।

पुष्टिमार्ग की प्रातःसेवा में राजभोग-समय से लेकर राजभोग के दर्शन तक की सेवा में यह राग के छः प्रकार ऋतुक्रमानुसार गाये जाते हैं । जो इस प्रकार हैं । (१) सारंग, (२) मवमाघ सारंग, (३) सामंत-सारंग, (४) गौड-सारंग, (५) नूर-सारंग, (६) मेघ-सारंग.

किन्तु अधिकतर और सभी ऋतुओं के उत्सवादि क्रम में 'सारंग' ही गाया जाता है ।

सम्प्रदाय के हस्तलिखित संग्रहों में सारंग राग के संख्याबन्ध कीर्तन प्राप्त होते हैं । सारंग राग के ६ या ८ प्रकारोंमें गाये जाने बाले पद-कीर्तनों का 'राग-सारंग' शीर्षक के अंतर्गत ही समावेश किया गया हैं । सारंग राग की शीतल प्रकृति होने से यह उष्णकालीन राग सम्प्रदाय में चैत्र मास से लेकर रथयात्रा के पूर्व दिन तक राजभोगसमय में गाने की प्रथा है । तदतिरिक्त जन्म-बधाई तथा त्यौहारोत्सव के समय पर भी यह 'सारंग' राग के पद गाये जाते हैं । संग्रहों में कहीं मघमाघ, सामंत, गौड या नूर सारंग का उलेख वहुत कन प्रमाण में प्राप्त होता है ।

आजकल संगीत-समाज में 'शुद्ध-सारंग' नाम का जो राग प्रसिद्ध है, वह-हवेली-संगीतपरंपरा के सारंग से पृथक् है । अर्थात् यह 'शुद्ध-सारंग' हमारी परंपराका राग नहीं है, ऐसा लेखक का स्पष्ट मन्तव्य है । अष्टछाप-घरानों में जो सारंग राग गाया जाता है उसी को कोई-

कोई 'वृन्दावनी सारंग' नाम से पहिचानते हैं। 'सारंग' को वृन्दावनी सारंग या वृन्दावनी को सारंग नाम से पहिचानने की प्रथा इस सैका के आरम्भ से ही प्रसिद्ध होने लगी, जो निम्न ग्रन्थों के उल्लेखों से स्पष्ट समझ सकते हैं :—

(१) ई. स. १८९२ में छपे हुए 'गायनदर्पण' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ. ३६ पर "सारंग" शीर्षक का ही उल्लेख इस प्रकार किया गया है। "सारंग राग ओडव—पांच सुरका है। गान्धार—धैवत बाद है। मध्यम स्वर प्रधान है। निषाद दो हैं, आरोहमें तीव्र, अवरोहमें कोमल स्वर—सा रे म ध नि सां, सां नि प म रे सा।"

पं. आदित्यरामजी ने भी अपने ग्रंथ में 'रागिनी-सारंग' के ही शीर्षक में चार पांच चीजें लिखी हैं, जिनमें से पहली चीज के स्वरों क प्रयोगार्थ देखिए।

"रे मप निसां निप निपम मम पप निपनि निनि सां सां सां रें

सांनिपम पमरेसा सांनिपम, सारंग सरस कर लई, रे म प नि सा।"

उपर्युक्त चौताल के द्रुपद की स्थायी की रचना में जो स्वर—स्वरूप बताया है वह आजकल वृन्दावनी सारंग ही कहा जायगा। तदुपरान्त विवरण में लिखा है कि "सारंग को ग ध वर्जित कहि के मध्यम अंश स्वर बनाया है। और दो निषाद माने हैं।"

तदतिरिक्त "संपूरन रूप भी आजकल गाने में चालू है, कोई तीव्र मध्यम ही मिलाता हैं।" इस उल्लेख में आजकल के शुद्ध—सारंग का बोध होता है, किन्तु आपने ग ध वर्ज्य और दोनों निषादों के स्वरों को ही 'सारंग' कहा है।

['संगीतादित्य' पृष्ठ—८६,८७ प्रकाशन ई. स. १८८९]

(३) पं. गणपतराव बर्वेजी ने 'गायन वादन पाठमाला' पुस्तक के पृष

—२६० पर क्रमांक १ में केवल 'राग सारंग' का ही नाम लिख कर जो विवरण दिया है वह ग ध वर्ज्य दोनों निषाद वाला 'सारंग' आज का वृन्दावनी सारंग है ।

(४) पं. विष्णु दिगंबर' के घराने में भी आज के 'वृन्दावनी सारंग' को 'सारंग' कहने का अभी तक रिवाज दिखाई देता है । उनकी परम्परा के पं. विनायकराव पटवर्धन नें अपने ग्रन्थ में 'सारंग के शीर्षक में ही चीजें प्रसिद्ध की हैं । उन्होंने इस सारंग को वृन्दादनी सारंग कहा नहीं है ।

[रागविज्ञान, भाग ३. पृ–१४७,१४८; प्रकाशन ई. १९३७]

(५) मास्टर दामोदर के 'गायनसंग्रह' में भी इस सारंग का वर्णन निम्न प्रकार किया है ! सा रे म प नि सां । सा $\underline{\text{नि}}$ प म रे सा ।

[प्रकाशन ई. से. १९१४, पृष्ठ ४३]

(६) 'संगीतकौमुदी' में बताया गया हैं कि—

"ग्रन्थों में जो 'वृन्दावनी सारंग' नाम मिलता है, जिसको बिंद्राबनी सारंग भी कहते हैं । मथुरा जिले में 'वृन्दावन' नामक गाम के नाम से वृन्दावनी सारंग नाम पड़ा हुआ माना जाता है । सारंग राग के अन्य प्रकारों में यह राग अधिक लोकप्रिय होने से अधिक प्रचार में है । अतः केवल 'सारंग' राग कहने पर वृन्दावनी सारंग' का ही मतलब समझ में आता हैं । अर्थात् चाहें 'सारंग' राग कहो अथवा 'वृन्दाबनी सारंग,' दोनों एक ही माने जाते हैं । जैसे 'दरबारी' को 'दरबारी कानडा' समझा जाता है, उसी प्रकार 'सारंग' अथवा 'बिंद्रावनी सारंग' एक ही चीज हैं । किसीको 'सारंग' गाने का कहोगे तो वह तुरन्त 'बृन्दावनी सारंग' ही शुरू करेगा ।"

(६) स्वयं पं. भातखण्डेजी ने भी लिखा है कि :—

"प्रचारान्त नुसता सारंग म्हणजे कोणी कोणी 'शुद्ध सारंग' समजतात् ब तोच 'ब्रिंद्राबनी सारंग' समजतात्" [मराठी हिं—सं. पं—भाग ४, पृ. ३९६]

अब सारंग के विषय में कुछ शास्त्रीय उल्लेखों की ओर दृष्टि करेंगे। प्रन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में 'पं. लोचन' ने अपने 'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में निम्न प्रकार का उल्लेख किया है ।

''एवं सति च गान्धारः शुद्धमध्यमतां व्रजेत् ।
षश्च शुद्धनिषादः स्यात् सारंगो जायते तदा ॥''

तदनुसार आज के उ.हिं. मेल के स्वर निम्न प्रकार होते हैं ।

''सा रे म $\overset{।}{\text{म}}$ प $\underline{\text{नि}}$ नि सां ।

पश्चात् इसी मेल के जन्य प्रकारों का भी इस प्रकार वर्णन किया है ।

''सारंगस्वरसंस्थाने प्रथमा पटमंजरी ।
वृन्दावनी तथा ज्ञेया सामन्तो बडहंसकः ॥''

उपर्युक्त श्लोक में वृन्दावनी पटमंजरी सामन्त तथा बडहंस के उल्लेख प्राप्त होते हैं, परन्तु 'लोचन' ने इन रागों का स्वतन्त्र वर्णन किया नहीं है । केवल 'सारंगस्वरसंस्थान' कह कर सारंग मेल के स्वर बताये गये हैं ।

पं. हृदयनारायणदेव ने भी लोचन का सारंग मेल लेकर अपने 'हृदयकौतुक' और 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थों में कहा है कि :—

''सरी गमौ पधनिसां निधौ पमौ गरी च सः ।
सम्पूर्णः कथितः सर्वैः सारंगो रागसत्तमः ॥''

[हृदयकौतुक]

''अतितीव्रतमो गाख्यो मधौ तीव्रतरौ कृतौ ।
यत्र निः काकली तत्र सारंगः पटमंजरी ॥''

[हृदयप्रकाश]

पं. अहोबलने भी उसी प्रकार 'सारंग' का वर्णन किया है :—

पं. लोचन, हृदयनारायण एवं पं. अहोबल के उपर्युक्त उल्लेखानुसार निम्न प्रकार सम्पूर्ण मेल बताया गया है :—

सा रे ग म म प ध नि सां। सां नि ध प म म ग रे सा। ये स्वरमेल अपनी उ. हिं. सं. पद्धति-अनुसार इस प्रकार क्रमशः होते हैं।

सा रे म $\overset{|}{\text{म}}$ प $\underline{\text{नि}}$ नि सां। सां नि $\underline{\text{नि}}$ प $\overset{|}{\text{म}}$ म रे सा।

यह सुप्रसिद्ध है कि स्वर(मेल)संस्थान के स्वरों में एक या दो स्वर कम करने से जन्य राग उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु जो स्वर मेल में नहीं है उस स्वर को प्रयुक्त करने से उसका जन्य स्वरूप नहीं रह सकता।

'सारंग' के उपर्युक्त शास्त्रीय स्वरमेल में से तीव्र-मध्यम का लोप हो जाने पर स्पष्ट रूप से अपना (बिंद्रावनी) 'सारंग' का स्वरूप दृष्टिगत होता है।

प्रचलित 'शुद्ध सारंग' में धैवत स्वर का नियमित रूप से प्रयोग किया जाता है। जो स्वर उपर्युक्त मेल में नहीं है, अतः उपर्युक्त शास्त्राधार का स्वरमेल (बिंद्राबनी) सारंग से ही अधिक सुसंगत होगा। मुख्यतः इस 'सारंग' को वृन्दावनी-सारंग कहने का प्रारम्भ काल का समय कोई निश्चित कहा नहीं जा सकता। फिर भी स्वामी हरिदासजी के समय में वृन्दावन तथा गोकुल मथुरा के देवालयों मे एवं सन्त कीर्तनकारों ने अधिकतर औडव जाति एवं दोनों निषादों के प्रयोग वाले 'सारंग' का ही गान किया हुआ सुप्रसिद्ध होने से भारत के अन्य प्रान्तों के कुछ लोग वृन्दावन के नाम पर से 'बिंद्राबनी सारंग' से पहचानने लगे होंगे। कुछ राग ऐसे भी हैं कि जिनके नाम प्रदेशों के नाम से प्रचलित हैं। जैसे सोरठ गुर्जरी इत्यादि।

ई. स. १९१८ की दिल्ही संगीत परिषद के पश्चात ही यह प्रसिद्ध होने लगा। इस समय तक गायक-वादकोंमें दो-तीन प्रकार के मत-मतान्तर होने का पं. भातखण्डेजी के निम्न उल्लेख से स्पष्ट होता है :—

"वृन्दावनी के स्वरूप के बारे में एक–दो मतभेद दिखाई देते हैं। कोई कहते हैं कि बिंद्राबनी के आरोहावरोह में गान्धार और धैवत स्वर वर्ज्य करकें दोनों निषाद उपयोग में लिये जायँ। उनका ऐसा भी मत था कि वृन्दावनी के अवरोह में क्वचित् धैवत का प्रयोग कुशलता से किया जाय।"

"दूसरे कोई कहते हैं कि 'वृन्दावनी' में ग और ध वर्ज्य करके एक ही तीव्र निषाद लिया जाय। यह मत सयुक्तिक है, लेकिन प्रचारमें दोनों निषाद लिए हुए स्वरूप ही अधिक दिखाई देते हैं।"

उपर्युक्त मतान्तर की चर्चा के पश्चात् परिषद् में 'बिंद्राबनी सारंग' का स्वरूप अधिक कलावन्तो के मतानुसार जो निश्चित किया गया जिसका पं. भातखन्डेजी ने निम्नप्रकार उल्लेख किया है :–

"सन् १९१८ ईसवीं में दिल्ली की संगीत परिषद् में इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी। और वहाँ इकट्ठे हुए कलावंतोंने अपना मत ऐसा दिया कि 'वृन्दावनी' के आरोह–अवरोह में गान्धार और धैवत वर्ज्य करके दोनों निषाद यानी आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लिये जायँ।"

[क्रमिक पु. ३. हिंदी आवृत्ति]

उपर्युक्त उल्लेखों के सारांश में यही कहा जा सकता है कि ई. स. १९१८ तक 'वृन्दावनी' का स्वरूप स्पष्ट हुआ नहीं था। पश्चात् अपनी क्रमिक पु. ३ में 'वृन्दावनी सारंग' नाम से 'सारंग' राग की संख्याबन्ध चीजें प्रगट की हुई दृष्टिगोचर होती हैं। और व्यवहार में भी 'वृन्दावनी सारंग' नाम से गायक–वादकों में अधिकतर प्रचार दिखाई देता हैं। अष्टछाप–घराने का सारंग वृन्दावन एवं गोकुल–मथुरा की परम्परा का राग होने से उसको 'वृन्दाबनी सारंग' नाम से पहिचाना जाय तो उसमें कोई विसंगतता नहीं है। नामकरण के सम्बन्ध में प्रचार और व्यवहार का

ध्यान रखना भी उचित ही है । अतः अष्टछाप-घराने की परम्परा मान्य 'सारंग' का 'सारंग' या 'बिंद्रावनी-सारंग' नाम से उल्लेख किया जाता हैं, जिसके स्वर-स्वरूपादि का वर्णन इस प्रकार है :—

राग सारंग : संक्षिप्त विवरण

'चढत तीव्र निखाद है, औडुव जाति सुहाई ।
रिप वादी संवादि तें, सारंग राग कहाई ॥'

(१) थाट काफी से सारंग राग उत्पन्न होता है ।

(२) **स्वर**-आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद किया जाता है । ग ध स्वर वर्ज्य हैं, शेष शुद्ध हैं ।

(३) **जाति** औडव-औडव है

(४) **वादी** ऋषभ और **संवादी** पंचम स्वर है ।

(५) **गान-समय** मध्याह्न माना जाता है ।

(६) **पकड़ स्वर**-सारे, मरे, पमरे, सा

(७) **आरोहावरोह**—

सां, रेम, प, निसां । सांनिप, म, रेसा.

—

उदाहरणरूप-निम्न द्रुपद चौताल में निम्न प्रकार गाया जाता है ।

स्थायी : जाको बेद रटत ब्रह्मा रटत संभू रटत सेस रटत,
नारद सुक ब्यास रटत पावत नाहिं पार ।

अंतरा : ध्रुवजन प्रहलाद रटत, कुन्ती के कुंवर रटत,
द्रुपदसुता रटत नाथ अनाथन-प्रतिपाल ॥१॥

संचारी : गनिका गज गीध रटत, गौतमकी नारि रटत,
राजनकी रमनी रटत सुतन दे दे प्यार ।

आभोग : 'नंददास' श्रीगोपाल गिरिवरधररूप रसाल,
जसोदाको कुंवर लाल राधा- उर हार ॥२॥

स्थायी

नि	म	प
जा	–	को

×		०		२		०		३		४	
नि				प		प					
सां	–	सां	सां	नि	प	मप	नि	प	म	प	प
बे	–	द	र	ट	त	ब्र–	–	ह्मा	र	ट	त
प		म				प					
म	–	रे	म	प	प	नि	–	प	म	रे	सा
सं	–	भू	र	ट	त	से	–	स	र	ट	त
सा		रे				प					
नि̣	सा	म	रे	म	प	नि	प	म	प	नि	सां
ना	–	र	द	सु	क	व्या	–	स	र	ट	त
						प					
नि	सां	रेंमं	रेंमं	सां	निसां	नि	–	प	नि	म	प
पा	व	त–	ना–	–	हिं	पा	–	र	जा	–	को

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प								सां			
म	प	नि	नि	–	सांनि	सां	–	सां	नि	सां	सां
ध्रु	व	ज	न	–	प्रह	ला	–	द	र	ट	त

सां		मं							प		
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	निसां	नि	प	प
कुं	—	ती	—	के	—	कुँ	व	र—	र	ट	त
प						प			प		
म	प	प	नि	म	प	नि	नि	प	म	प	प
द्रु	प	द	सु	ता	—	र	ट	त	ना	—	थ
				सां		प					
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	—	प	नि	म	प
अ	ना	थ	न	प्र	ति	पा	—	ल	जा	—	को

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	प	—	म	प	नि	—	प	म	प	प
ग	नि	का	—	ग	ज	गी	—	ध	र	ट	त
						प					
म	प	नि	नि	म	प	नि	नि	प	म	रे	सा
गौ	—	त	म	की	—	ना	—	रि	र	ट	त
सा		म				प					
नि़	सा	रे	म	प	—	नि	नि	प	नि	म	प
रा	—	ज	न	की	—	र	म	नी	र	ट	त
			पा								
नि	सां	सां	नि	प	प	म	रे	म	प	—	—
सु	त	न	दे	—	दे	प्या	—	र	—	—	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
नि	—	नि	सां	—	सां	रें	सां	नि	सां	—	सां
नं	—	द	दा	—	स	श्री	—	गो	पा	—	ल
						सां					
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
गि	रि	व	र	ध	र	रू	प	र	सा	—	ल
म	प	रें	रें	मं	मं	रें	सां	रें	सां	नि	सां
ज	सो	—	दा	—	को	कुँ	व	र	ला	—	ल
नि	सां	रें	सा	नि	सां	नि	—	प	नि	म	प
रा	—	धा	—	उ	र	हा	—	र	जा	—	को

राग सारंग—ताल चौताल

एसी बंसी बाजीरी वन घनमें व्यापि रही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ।
भयो ब्रह्मनाद उठत आह्लाद जहां तहां व्रज घोख रत्न वृन्द भये सब त्यागी ॥१॥
रासादि अनेक लीला रसभाव पुरित मूरति मुखारविंदछबि धरे
विरह अनंग जागी ।
तब बेनुनाद द्वार अब लछमनभूपकुमार, 'कृष्णदास' दैंवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२॥

'पद्मनाभ' पाठांतर प्राप्त होता है ।

स्थायी

							म	प	नि	सां	नि
							ए	सी	बं	—	सी
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि	—	प	नि	प	म	रे	सा	—
बा		—	जी	—	री	ब	न	घ	न	में	—

नि़	सा	—	म	रे	मप	नि	प	म	रे	—	सा
व्या	—	—	पि	—	र—	ही	—	—	ध्व	—	नि
म	—	रे	म	—	म	प	—	प	नि	म	प
म	—	—	हा	—	मु	नि	—	न	की	—	ब
निसां	रें	रें	सांनि	सां	नि	प	म	प	निसां	रे	नि
मा—	—	धि	ला—	—	गी	—	ए	सी	बं—	—	सी

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	नि	—	नि	सां	—	सां	सां	सां	सां
भ	यो	—	ब्र	—	ह्म	ना	—	द	उ	ठ	त
नि	नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	नि	—	—
आ	ह्ला	द	ज	हां	—	त	हां	—	ब्र	—	ज
रें	—	रें	रें	सां	सां	रें	नि	सां	—	नि	प
घो	—	ख	र	—	त्न	वृ	—	न्द	—	भ	ये
रें	—	—	सांनि	सां	नि	प	म	प	नि	सां	नि
स	ब	—	त्या	—	गी	—	ए	सी	बं	—	सी

राग सारंग—ताल चौताल

वृन्दावन कुंजनिमें मध्य खसखानो रच्यो
सीतल बयार झुकि गोखन बहत हें ।
सुगंधी गुलाबजल नाना बहु भाँतिनिके
ले लाइ धाइ सखी सब छिरकत हें ॥१॥

धार धुरवा छूटत तहाँ नीके
दादुर मोर पिक सुक जु फिरत हे ।
'कृष्णदास' फुहारे छूटे मानों मन्मथ लूटे
झुकि झुकि झुकि धारे हौदनि भरत हे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां			प			प					
नि	सां	सां	नि॒	प	प	नि॒	प	प	म	रे	सा
वृं	ऽ	दा	व	ऽ	न	कुं	ऽ	ज	नि	में	—
सा											
नि़	सा	रे	रे	—	रे	प	म	रे	रे	सा	सा
म	ऽ	ध्य	ख	ऽ	स	खा	ऽ	नो	र	ऽ	च्यो
नि़	सा	रे	म	प	प	नि॒	प	म	प	नि	सां
सी	ऽ	त	ल	ऽ	ब	या	ऽ	र	झु	—	कि
रें	—	सां	नि॒	—	प	नि॒	प	म	रे	म	प
गो	ऽ	ख	न	ऽ	ब	ह	ऽ	त	हे	ऽ	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
सु	गं	ऽ	धी	ऽ	गु	ला	ऽ	ब	ज	ऽ	ल
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि॒	प
ना	—	ना	—	ब	हु	भां	—	ति	नि	के	—

म	प	रें	रें	—	सां	नि	सां	सां	प नि	—	प
ले	ऽ	ऽ	ला	ऽ	इ	धा	ऽ	इ	स	ऽ	खी
नि	सां	रें	सां	नि	प	नि	प	म	रे	म	प
स	ब	ऽ	छि	—	र	क	त	ऽ	हे	ऽ	ऽ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	—	नि	प	—	प	—	—
धा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	धु	र	ऽ	वा	ऽ	ऽ
म	—	म	प	—	नि	सां	—	—	प नि	—	प
छू	ऽ	ट	त	ऽ	त	हाँ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	के
म	प	नि	प	—	प	म	—	रे	रे	—	सा
दा	ऽ	ऽ	दु	ऽ	र	मो	ऽ	र	पि	ऽ	क
नि़	नि़	सा	रे	—	प	म	रे	—	सा	—	—
सु	क	ऽ	जु	ऽ	फि	र	त	ऽ	हे	ऽ	ऽ

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग सारंग–ताल सुलताल

स्थायी : बलि वामन हो जग पावन करन ।

अन्तरा : कहि न परत सोभा नील मनिनसी गोभा,
गगन गयो जब सुन्दर चरन ॥१॥

संचारी : बन्यो हे भेद अति उतते गंगाकी धार उज्ज्वल वरन ॥२॥

[उपर्युक्त पद श्रीनंददासजी-रचित है। वामनद्वादशी के दिन यह पद गाया जाता है। सम्पूर्ण पद के लिए देखिए काँकरौली-प्रकाशन-'तृतीयगृह कीर्तनप्रणाली के पद' पृष्ठ-५७]

स्थायी

×		०		२		३		०	
								निं	सां
								ब	लि
रें	—	सां	सां	नि	सां	सां	नि	—	प
वा	—	म	न	हो	—	—	ज	—	ग
नि	—	प	म	रे	मप	निप	मप	नि	सां
पा	—	व	न	क	र—	न—	——,	ब	लि

अन्तरा

×		०		२		३		०	
म	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां	—	सां
क	हि	न	प	र	त	—	सो	—	भा
नि	सां	रें	मं	रें	सां	रें	सां	नि	प
नी	—	ल	म	नि	न	सी	गो	—	भा
म	प	निं	सां	रें	सां	रें	नि	सां	निप
ग	ग	न	—	ग	यो	—	ज	—	ब—
नि	—	प	म	रे	मप	नि	प	नि	सां
सुं	—	द	र	च	र—	न	—,	ब	लि